Shortage of Coal and its Transport

*23. **Shri Harish Chandra Mathur:** Will the Minister of Commerce and Industry be pleased to state:

(a) whether the Federation of Indian Chambers of Commerce and Industry complained against procedural delays and shortage of coal and transport at their annual meet;

(b) whether these complaints have been examined; and

(c) if so, what are the conclusions and action taken?

The Minister of Industry in the Ministry of Commerce and Industry (Shri Kanungo): (a) to (c). The Government have received on the 17th instant a copy of the resolutions adopted at the last annual session of the Federation of Indian Chambers of Commerce and Industry held from the 24th to the 26th March, 1962. In these resolutions the Federation have made recommendations, *inter alia*, regarding removal of procedural difficulties, adequate supply of coal and augmentation of transport capacity. These recommendations are under examination and appropriate action will be taken.

भारत-तिब्बत व्यापार

*२४. श्री म० ला० द्विवेदी :
श्री स० चं० सामन्त :
श्री भक्त दर्शन :
श्री श्रीनारायण दास :
श्री बासप्पा :
श्री नाथ पाई :

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि चीन सरकार ने भारतीय व्यापारियों को किसी भी प्रकार के माल को लाने ले जाने के आज्ञा-पत्र देने से इन्कार कर दिया है जब कि नेपाली व्यापारियों को ये सुविधायें खुले रूप में दी जा रही हैं यद्यपि वे पूरा माल उठाने में असमर्थ हैं; और

(ख) भारत-तिब्बत व्यापार की अब क्या स्थिति है और इस सम्बन्ध में क्या कोई सुधार होने की संभावना है ?

वैदेशिक-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्रीमती लक्ष्मी मेनन) : (क) जी हां। यह सच है कि तिब्बत में चीनी अधिकारियों ने भारतीय व्यापारियों पर बहुत सी पाबंदियां लगा दी हैं। हमारे कुछ व्यापारी जो अस्थायी रूप से अपनी दुकानें बंद करने के बाद यातुंग लौट चुके हैं, उन्हें व्यापार शुरू करने के लिए अनुमति-पत्र नहीं दिये गये हैं। दूसरे जिन व्यापारियों ने तिब्बत में माल ले लिया था, वे उस माल का निर्यात करने के लिए अभी अनुमति-पत्र पाने का इंतजार कर रहे हैं। इसके विपरीत ऐसे सभी मामलों में नेपाली व्यापारियों को विशेष रियायतें दी गई मालूम होती हैं और उन्हें बिना किसी रोक-टोक के तिब्बत से माल तथा सोना, चांदी और बहुमूल्य जवाहरात बाहर भेजने की अनुमति है। संभव है कि कुछ नेपाली व्यापारियों को जितनी व्यापार की मात्रा सौंपी गई है उसे निभा सकने में उनकी क्षमता सीमित हो, लेकिन सच्चाई यह है कि उनके साथ जो नीति बरती जा रही है उसके द्वारा जानबूझ कर भारत-तिब्बत व्यापार उनके हाथों में रखा जा रहा है।

(ख) तिब्बत में चीनी अधिकारियों ने रुकावट डालने और सहयोग न करने का जो रवैया अपनाया है, उसका यह नतीजा हुआ है कि पिछले तीन वर्षों में भारत-तिब्बत व्यापार धीरे-धीरे कम होता गया है। आजकल व्यापार बहुत सीमित मात्रा में है। यदि चीनी अधिकारी उन रुकावटों को हटाने के लिए सहमत हो जायं जो उन्होंने हमारे व्यापार और हमारे व्यापारियों पर लगाई हैं और हाल की उन भारत-विरोधी नीतियों को बदल दें जो १९५४ के क़रार की भावना के विरुद्ध हैं तो इस व्यापार में फिर प्रगति होगी। लेकिन इसके कोई संकेत नहीं हैं कि भारत के प्रति